

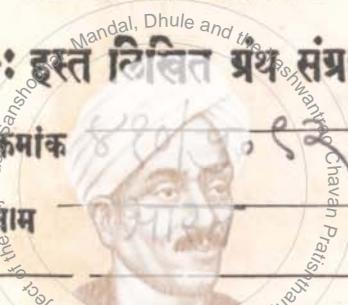
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: इस्त लिखित ग्रथ संग्रह :—

ग्रथ क्रमांक

ग्रथ नाम

विषय



९२ (५५३)

कथा-पुराणे.

Joint Project of the
Santoshawad Mandal, Dhule and the
Dashwanthi Chavan Patil Shrikrishna
Library, Member No. _____

नी गौनः मग सत्त्व संवरलेपोटीः ॥७५॥ मग ध्रुउ निलाग तीवर
नीः आम्ही अपराधी महौ नीः शांती है माजवलों बोनी उआय
दे है रुषीः ॥७६॥ मग उआय वन्वनः नारद बोलेत याला गौनः
जी वीरोधें सात जन्मी पावनः पावाल येश्वें ॥७७॥ वीरोधक
राल देवासीः तरतीज नभी पावाल मुक्ती सीः ऐ साउ आपवन्वन
त्या सीः अनुवादे मुनीनारद ॥७८॥ इतु केंजालें वर्तमानः मग
नारदें केलें श्री दत्तस्वंदत्त न ये राम यो पातीयतननः जालें ज
येवीज यासी नेहां ॥७९॥ राहीर नाहीर न्यक श्री पञ्चसुरः
केंजालेहाथे सोहद रद्देव राहीर निंमी दीती ओर आद्रमतीः
॥८०॥ राहीर नाहाण तो वा राह ना रालाः दीर न्यक श्री पातो नार
सी हें वीदा रीलाः पुहें त्याला गीज नमजोत्याः रावन कुपकर्णः
॥८१॥ रावन कुपकर्ण जालेः ते राम अवतारी वधीलः मागौ
ते सैख्य सीशु पाक्षजन्मलेः द्वा पारा आंतः ॥८२॥ श्री शुपालूत्रः
नयेनीजन्मस्ताः सैख्य सीमा आदंत देरवीलाः महोनि वक्र द
त नावं पावलेः सैख्य माहावीर नोनः ॥८३॥ योउ वीराज सयन्त्रकल

ज्ञाते धवातो श्री चूपाक्ष वर्धीलः सैलमत या न्या ब्रंधु राहीलः तो रा
उम्य करी नैद्य दे श्री न्येः ॥४॥ वीरव के श्रान्ते जाउ नीः ऊ नीला तो
आ ल्हानो नीः मग मांड वा न्या वधा लागो नीः प्रवर्त ला तो ॥५॥
वधु नि पांड वा सीः राजी स्त्रा पा वे वं कर्ण पुत्रा सीः हाहेत धर्म नि
मान सीः सक व्व सैन्ये सी न्या श्री ला ॥६॥ ये नो वे नो जे से येतः ॥६॥
हस्त न्ना पुर पा व ला लू री लः सा न द्वौ नो स म वेतः इव भारत
या स वेः ॥७॥ ज रा स दा-ना दु भरः स ह अ आ हो मादा ज सुरः
पा न शौ नी इव भारः ते या स वं भाले य ॥८॥ ऐ सैद्वो यही राज्य
धरः कुरु क्षेत्रा सी ये न नी स ल्लः त ब य री क डे द यो ध न ना
वी न्यारः वर्त ला कै साः ॥९॥ त यो य व जा ले या वरीः भी मादे यो
ध न नार न ली जु ज्ञा रीः ग दा य व भी त रीः यु ध्य हो न अ से ॥१०॥
माते पुहं न ग न न्दा लाः ते ने गांधा र व ज्ञ श्री री जो लः भी म व ज्ञ श्री
री री म ला ज से जे मा दि सी धः ॥११॥ हा धा भी द त जु ज्ञा रीः ये क मे
का न मे त्री हरी जै से व ज्ञ व ज्ञ व रीः य ड ती य व त ज्ञ यः ॥१२॥ भी
मादु यो ध नो नी वा नः यु ध्य हो ता ये मादा दा रु न ते ने जा ला न व

Joint Photo © Shri Mataji Mandir Trust, London, Clevver Media, Joint Photo © Shri Mataji Mandir Trust, London, Clevver Media

सीगेलादीनमानः संध्याकाव्यजालाः ॥१३॥ संध्याकाव्यजालाये औः म
रमरननहेदुर्योधनातेजरिबल्लिसद्रमावेत्वरीतः तरवाच्य
दुर्योधनः ॥१४॥ मगश्चीद्ग्रस्त्रवीच्यारीभानसीजातोयेनेहोइ
लबल्लिरामासीः मगका हीदुर्योधनासीः वधीलेनवन्वेः ॥१५॥
मगदेवेनीमानेलहोनः दा कौलीजानुवीक्षागीच्यीरवनः येरेवा
महानेंवन्वलोनः गदादाकीहीजानुवरीः ॥१६॥ जे सीपंचाणगा
च्यीच्यपेटः चैसे साधुव्याख्यांगी नीट तै सीगदादेरवआचाटः चै
सक्षीमांडीयेवरीः ॥१७॥ द्यावेल्लामांडीवरीः तैनेंगांधारगे
लान्वान्वरीः सवेंचिहा नीनल जानुवरीः तैनेंगीरीरीयेउनिम
उलाः ॥१८॥ पाहोनिमांडीअन्नावदोः भीममारीगदेचाघावोः
मांडीमोडोनिपावोः पडीलाक्षीनीवरीः ॥१९॥ जानामीक्यसु
वीदारीः तैसेघायेपडतीजांगावरीः परतोजांगीक्यत्रारीरोः
काहींसंगानयेः ॥२०॥ जीवनवन्वेजाहीकेलियाः मारीताहा
तराहीलतआः तवेआक्षास्मानजास्वस्त्रामयाः तैश्चमेनेजो ॥२१॥

लें॥१॥ ब्रह्मत्राक्तीनेंघेउनः महणतीजालाजा लाद्रोणगांदणः
मग पांडवीकाढावाकाटौणः नीगतेजाले॥२॥ मार्गीब्रोलतीपां
उवः गांधारान्वापुर लागवोः परदेहापा सावनीवः सुदला
नादी॥३॥ गांधार प्राणंनाशीगेलाः परधाक्षेजरश्वरजालाः
मागौनाउडेनरत्यालाः वरानाकार्यप्रयेत्यः॥४॥ तवंश्रीशूल ॥५॥
महणपंडुसुनाः आतांगांधार तवेसरेयाभागौताः हर्षवीसादभी
वतीसमताः नेहांमरनहोः सरसा सी॥५॥ तोआपुलीभायक्तीः
प्राणसोडावयान्वीजानेगत्ता आनीकृष्णवीगतीराहीली
सर्वः॥६॥ ऐसेअनंदपरीत्तापुर सेलिकारासीनीगाले सेमस्तः
यरीकडेदुर्घ्येधनान्वाव्रतांतः वर्तलाकैसाः॥७॥ आतांदुर्घ्येधना
यासीसकैक्तीकः मीक्तीकौंरवान्वेलोकः पुढेकैसेवर्तलंकौतु
कः नेंश्वातीआर्दकावेः॥८॥ भोजउपनामसारंगचिरुजदनक्ता
नक्तीन्वामेसुसंनाकरोनिनमस्कारः महणोनवरसनीरस्ते
नः॥९॥ देतीक्तीमाहामारथेसनसहअसहीतामायद्वरुक्ती

Reproduced with the kind permission of
Mandal Bhawan and the Krishnamoorthy Chettiar
Research Library, Madras
"Joint Member"
Member

नीमतिं रामश्वरकश्चाभाहा सैल्पयर्वर्वनोनामप्रथमो प्रसंगः ॥



तवयेरीकडे दुर्घान्धि न सुपतीः तव मवीत पड़ला रनही तीः
बनीरामधरौ नियान्वीती मनीध्यानी वाट पाहे ॥१०॥ न्यातव्रभ
घान्वी वाट पाहे वक्रो रव्वं द्रातें ही जी न जाहे तै सागांधार लव
लाहे देखी बहिं भद्रातें ॥११॥ यनुवां मेछरु पाते घेउनः
केलें संरवा सुरान्वें वीदारन वेदाते स्त्रायौनः ब्रह्मासंतो
स वीला ॥१२॥ कुरुतातारी लें द्युधी सी वारा
हरू पें वीदा री सी हीर न्यकश्चीया वाजा सुरा ॥१३॥ देखें प्रल्लाद गां
जीला मगते ने रवा बत्रा हाथीला ने हातु जउ भद्र वजा ला यार सी
हें हरू पें रामा ॥१४॥ बहिं या येक्क वीध्यो सीला मगतो ने उनि पाता
वीध्यानला ने हां रामरू पें न दला प्रत श्वेतीलु तुव्वि ॥१५॥ तुमा
र्गव बुद्धी अवनहेनः केलें श्वेतीयान्वेनी दीक्षनः गौरव हीजा

तैं करनः स्त्री यीले राजपदीः ॥१६॥ पुढां रावन वधा कारनेः हर
र श्री नुवां विहो नैः आतां माद्येया सात्या अवतर नैः जालं चंक
र से नातुजः ॥१७॥ जो धकलं की रूपें दो न्हीः मागो नाहो सीनी वी
नीः दै स्लह वनाते स्त्रीयौ नीः मंहारी सीमा गोत्राः ॥१८॥ ऐसी
बवीरा मान्यी स्तुतीः दुर्योधन नव गीवीं ताष्टीः नवं पीतहरा ॥१९॥
लासी द्वगतीः रावो ध्यान रुः ॥२०॥ पीताआशध्यन राष्टरः
आत्म श्रामाद्रान कुमरः वी ऋवत्रान वीरः पुत्रकर्नीन्याः ॥२०॥
खरं यउ निया स दुनीः सै यवा वलान त श्वे नैः दुर्योधनाते
यतीतद रवौ नीः दुर्यव ललाः ॥२१॥ येकमेक जोलतीन्द
यतीः मृणती जातां कै सो के रावो स्त्री तीः नवविदिरा मसीषा
गतीः संध्याकाली जालाः ॥२२॥ बविद्युत्र जालारे जालाः संक
रसन पावलाः दुर्योधन जारा मजालाः रामत्राहृं करौ नीया
ः ॥२३॥ जैसा पवती वनवाला गलाः वरी प्रजन्यवर्षी वकला नै
सा दुर्योधन नीवालाः रामत्राहृं करौ नीया ॥२४॥ नवयवरा
मजाला महणतीः उद्देव दने पाहोतीः नवबविदिरा मसीषा गतीः

करावें॥६२॥ मगराम महेजा स्वशाम यासीः घातजालादु प्र्योधि
ना सीः तो सुडआयन या सीः घेन ला पाहीजे॥६३॥ जातो वीरापं
उवासीः घातकर नें प्रभातेसीः तर मजसो मवं सीः संकर सेन
राम महनावें॥६४॥ तवं जास्वशामा महेणो रा माः वीनं नीयेक्षुअ
सेतु म्हाः जाधीमाझीयाप्राक्षमाः मा हीजेतु म्हीः॥६५॥ मी ब्रह्मलु
वनापा सौनीजा लोंजसेत्र सा की घेउ नीः ती येसी आहोनी
देउनिः जाधीयांडवाची॥६६॥ गद्धेनिनवध्वतीजरीः तेर
तु म्ही वधावें नीधरीः प्रहरा माझा रीः वधैन यावैज
नः॥६७॥ जास्वशामा जानिवलि भद्रः दो घैक री तीयर स्यरेवी
यारः तवं मध्ये सकुभी आङ्कुस्तुत्तरः बोलों अदरीलें॥६८॥ मह
णेयेकज सेउ पावजे नें योड वा हो दील आपावोः हा साघन अ
सेउ पावोः अगम व्यास्त्वाच्वाः॥६९॥ गाणा आपार मंत्र वीकारः
सत्त्वयांड वाच्वे हरीजे सावारः तेह व्यी पांडव वीरः होनीटनस
मानः॥७०॥ कहु निकुटीकुजांत्रेः होमहवनादीकं वीच्वें भ
ग पांडवाच्वी वगत्रेः जैयन पाडावीं हीनी सी॥७१॥ नातरीवीस्वा

Reproduced with the kind permission of the
Mandir, Dilwara and the
Vidyasagar Chaitanya Charan Das Library

स ब्रुधी हात नीः करा वीये काधी घात कर नी ऐ सी ये ची मांड नीः मज
स को नी आमा सी अ से ॥७२॥ जा नी क येक अ से र्ही तीः जरि पांडव
द्वाल सज नी दलतीः तर पाम रेजा उ नी मा री तीः त या पांड वा सीः
॥७३॥ पडे शूला सी अं मरा वो ऐ सा जा ने भी उ पा वोः मग पांड वा
सी ग वोः त्री हो कीन भी क्लेः ॥७४॥ सत्कज आ व्यंजा ये जा नः श्री द्वूरण ॥७५॥
या पाहे पांड वा व्यंवद नः ज्ञाज सत्वे ज्ञाध ला श्री द्वूरणः राहे पा वी सी
उ भाः ॥७५॥ ऐ सी आ सी उ पा वोः करा वी छह जा पा वोः नातरी वी
स्वा सौनिया वो ये डावा पांड जावा ॥७६॥ वी स्वास घात ऐ सा की जे:
अपन त्या ला द्वार न जा ई जेः पर्जा व्यान री दी जेः काव्य कुर बी जे:
॥७७॥ ऐ सें सांघता सकु नी आ गा श्री आ द्वी कौनि बलि रा माक्रोध
अदु नान्वियो टीः वी त्रव कै द्वान व क्रुद्ध श्रीः पा हान जा ला ग ॥७८॥ आ
ई कौनि सकु नी आ वी ज्ञो ल नीः से ल्लवी सादे लाङ्गं नः कर नीः मह ने
मर मर पा पी द्वाव बनीः ऐ सा क्रुद्ध ज्ञो लि ला सी ॥७९॥ आ रेज या
या ही अंग वनः स्वयं पुरुष वा वी व्यंज्ञ नः त यादु द्वाव अन्वर न ये
सें व्यिज से ॥८०॥ आ रेतु ही ना वा ही नः मुरवी पा सोनि मुरवी नी पु

न तु द्वीये बुधी लागौ नः प्या त सर्वनिजा लः ॥१॥; भी अन्नार पंजरी य
उ लः द्रो नान्यार्था देहो छेदी लः कर्ने वीरर नीपड लः स को नीया
तु द्वे नि पायेः ॥२॥; सो मदं तज यद्रथः भुरी अवाञ्चानि भगदं तः
आ नीक वीर बुदु तः गेले तु द्वे नि पायेः ॥३॥; राया सी द्रो पदी वा
आ पला गला: पुत्र लक्ष्मन पटि लः सेव टी गांधार नीमाला: तु द्वी
या बुधी लागौ नीः ॥४॥; तु गाहा या मादी रा सी दुष्ट दर्जन सदा वा
अ स सीः लागता तु द्वी आ बुधी नीः प्रामहा दी घात होइ लः ॥५॥;
ते है जी न व कान्व दो नी स कौः ॥६॥; गे भयो जै के ली कर नीः ते वी न्य
के नी ना सै ल्या तु मन्ये नीः कर नी न हो ॥७॥; भी या पंड वादी धि
ल व न वा स ला रवाग्ट शी आ ला नि जो वी लें खा सः ज्ञातां भी नियां
उ वा सः ज्ञानि ज्ञानी दुर रव करी नः ॥८॥; मह या भी की तीये कान्वा
घात के ला: की तीये का ज्ञा पावार न्यी ला: की तीये का सी दी ध ला: मा
न्य मान्य ताज प मान मगः ॥९॥; की ताये का हे वा न्या: प्या त के ला
भी त स्त शी न्या: कुड क पट मंत्रा वा: ज्ञाधी कारी भी निज से ॥१०॥;
ऐ सें जा पुले गौरव सांघे सप्ते माझी वै भवः ज्ञादी कौनि वी व्रव के

श्राना देवोः क्रोधन्वदीनलाः ॥१०॥ मरमर पापी याण दृष्टुक्ल है नारे
कुक्ल भवद्वाः तु जसनि धी असतां दुष्टाः आमहं यसन्विनयः ॥११॥ अ
स्य कजन सुपतीः तेतो जाती मर न स्त्री तीव्र वर तु ज्ञी मर न गतीः
केउती ने नौः ॥१२॥ तु आ कुक्ल नीउ न अधम पापी यावी लक्ष्मनः प्र
भाते तु श्रेव वद न अवलम्बन विनयः ॥१३॥ मीक नीवा कुमरः सत्य ॥१४॥
वाही दान सुरः तु पापी यादु राजा र यथो न सावा सीः ॥१५॥ सत्य
समरं गनी भीड़ो जेः दात्त्वेः रानि दीन दीजेः सत्य वन्वेने तरीजेः
संसाव सागर दृष्टुः ॥१६॥ मारु दास वाची योगीः वेद रास्त्रासी अ
गोवरीः दुरंधर सव सागरीः तारु सत्त्वविहायेः ॥१७॥ तु ज्ञा भाद
कवी वासुः तु श्रेष्ठो निजाति निर वक्तुः आमहा पासी दुष्ट उत्तर सुपापा
वें ब्रोलो न कोः ॥१८॥ आरे सत्कज यान्विजायः तो नर रवर वीयन्वीज
तायेः तु ज्ञा मान सी पापन्विजादेः तु उत्तर ये श्रौनियाः ॥१९॥ आनां आ
धी कजरी जो लसीः तरछेदीन तु ज्ञी या हस्त पादा सीः जुंघौ निस्या म
बैलसीः दाही दी सामां दीनः ॥२०॥ तेहैली सकनी आमहणः तु ज्ञेव दु
तजग छें बौल नें आजान मूनो निउ पे सा हानें नातरि तु जहावी तो

ग्रन्तीतीः॥२००॥; हारेतु कालिव्येलैंकरुः तुशाकार्द साबडीवारुः मुरवरा
जनीतीन्याप्रकारः तुजके वीभा वेन॥१॥; एसासकुनी याबोलिलमः आर्ज
कोनिवी ऋवके सन कोपला: रवर्गियावोदाको अदरीला: तवं सैल्ये
धरीशाकरः॥२॥ सैल्यम्हणे वी ऋवके त्राना: एसैन्तु मव्येवरनया
हेजायाः आपनया माझीआयमा: कब्ज्ञावरुनये॥३॥ मिगवी ऋव
के त्रानम्हणुदत्तसी: उद्भुति नियाकारया सी: नगरमाहाद्वारासी:
पीटौनि बोद्धीरधालम॥४॥; एसासरनीयानी मत्सीला: मर्गनेउवौ
नियालिला: म्हणे माझकुदलागः॥५॥; होताद्युर्धनः॥५॥; माझादु
र्धन्योर्धनअसतोः तरमजयः॥६॥ तं प्रमानका होता: क्रोधधरनी
आन्वीतः नीगालाते घोनिया॥७॥ आयुलीसह आसेताघेउनीः
त्वरेनीवडला सैन्यानुनीः रनरवांवा युवै अयेउनीः आंथारव
डीउतरला॥८॥; मर्गमाहाक्रोधेशववद्वला: समसानमुभीक
सीउतरला: नगरहोउनिजैसला: होमकुडकरुनी॥९॥; इति
पात्रजानि वेताष्ठः चौरवयोगीनीवैदद्वः समसानीमवउ
नीसकव्यः वेतवीतजाला॥१॥; ग्रहसुनें पीसान्वीकाः जाप

स्मारउन्मादव्यंडीकाः जोलाउनिसक्वीकाः पुजा करीः ॥१०॥; बावन
वीरजोहा नीलेः नव नार कैंज स तीआलेः सोक्ष्माव्ये इकैंवेत वीले
समसानी माडीः ॥११॥; न गनहोउनिजा पनः करीप्रत्युत्स्तुतीव्यंपु
ज न जेजप्रत्युत्स्तो ये प्रसन्नः तैश्चाडीपांडवावरीः ॥१२॥ एसींकीती
ये कप्रत्युत्स्तेप्रसन्नजातीः महा प्रत्येकवीलीः मगजाजाभूणोनिजा ॥१३॥
स्यादीधर्लीः पांडवावरीः ॥१३॥ जोमाहेजालनेये शोनिजाताः पुढें
कैसीवर्तलीकथा आतायां उवदव्यी व्यावातीः ओतीआर्ज्जकावी
ः ॥१४॥; दूलधनुष्यनामयो ग्रस्वः त आव्यासीस्यनोमुनेस्वरः
संताकरोनीनमस्तारः महनेनवर सनारायनः ॥१५॥; हैतीशीम
हाफारये सतसहश्रसहीता गाय यारुषीनीभूतिं स कोनीआनी
रवंडनमाहासैल्पपर्वबर्वनानामझीतीयो प्रसंगः ॥१६॥;



तवंये रीकडे न्दयनाथः सफेक्षैसले पांडव सुतः पुजौ निश्चीचूलातेः
सर्वसभाजनंदलीपा ॥१॥ गर्दगर्जिय पात्रव्यैसे दीवटे हीलालला
गलेः तेहेक्षीमुपाक्षोद्गेआलेभज संशानभा ॥२॥ कनकदंडेवव
रेंट लतीः न्दय सीहां सनी सोजती आंग सेवकउसे राहातीः दोही
बा हीः ॥३॥ यादवो मांडवानेह अयेकवट मीनलें तुंक्वक्ष्यक
सफेक्षैसले नीच्छकः पहांती पाये भारुक्षे ॥४॥ वीप्रान्वेमंगव्य
न्यारः भाटाचाहोत्तुरेगजरः जा निवाद्येघोषेआंघरः दनानीत
असे ॥५॥ रायसक्तीक लेसलः सौर्यप्रतापें बोलंतेजाले आ
होयुवीहोनेकेलेः अध्येप्रसंगीड डे हीः ॥६॥ महानीये साकोन
जोहेसुभटः मुध्यीराहे नीच्छक नोइः याचारोनिजाले इः लोटीए
सावीरकेवा ॥७॥ येकसक्तमाजीजनंदलेः हास्यवीनोदंरंगव
टलेः गंधयुस्त्रीत्रोक्षलेः साक्षांद्रतसुंदर ॥८॥ वधीला कौंरव
नाथः महानिधर्यधुक्तव नीक्षानवाजेनः ददं भीस्वरेकोदनः ग
गनगकी ॥९॥ एसाहोनजे से गजरः सेक्षैक्षैसलावत्रधरः पु
टेंधर्मन्दयवरः बंधुवर्गेसी हीसे ॥१०॥ लवंयक्षयेउनिवातीत्रा

रः सांघतीकौं रव सै न्यान्वावीचारः म्हणतीबल्लिजाइन्द्रन्तयवरः आतांवि
आलाः ॥२३॥ सै श्यवीन्वक्त्रन स कौनीः भेटलेबल्लिरभालागोनीः
गांधार सुड नतहृ नीः घेवों पाहातीना॑ ॥२४॥ जोलती ब्रीदान्वाजडीवा
रः ब्रह्मशक्तीन्वेबल्लिओरः बल्लिरभाक्तीधआपारः आदूतजसेः ॥
२५॥ प्रभाते पांडववधावयावाः नीअवयमोजालजा स्वच्छमग्राम्या ॥१४॥
तै सान्विबल्लिरभान्वाः नांजलाजालादीसेना॑ ॥२६॥ जोनीकनवलप्र
कारजालाः सै ल्ये स कोनीजायमानालाः सै न्यान्वाहीरधातलाः थी
टोनिवी स्वकेसमेंगरेव ॥ तोज्जताडिउनिसमसानासीः नगनवैस
लाहोमत्रुंडासीः या णावीव सा यासाः न्वेन वीताजालाना॑ ॥२७॥ ऐसाकौं
रव सै न्यान्वावीचारः नीरुत्तान्तानेजाले वार्तीकार न्वेततरः आहूजो
हपीहेरः तेवीहेऊसती ॥२८॥ ऐसे वार्तीकारान्वेततरः आहूजो
निवीरामलेन्दपवरः आहूकताचीनीचीनासुरः आदूतजाले ॥
२९॥ आहो आले याबल्लिरभाः सुध्येमांडलेन्तुम्हाआम्हाः मगया
इववीरतेहां जोलतेजालेना॑ ॥२३॥४॥ म्हणतीवीन्वक्त्रसनसुपतीकेलः
सैल्पतयान्वाप्रधानजालाः म्हनौनिसकोनीयाभवंडीलाः अयमा

नैनिते ही॥४५॥: न्हौनि नरजातां सुध्य होर्दलः सकोनीया काहीं
मावरन्धीलः एसेन्ह पवर जो लः जो लती वर्दश॥४६॥: यो क महणती
दुर्घीधन पडिला ग्लेआना नकरी ती सुध्या र्गः यो क महणती वर्दि
रो मआ लः सुध्यनी वर्नि होर्दलः॥४७॥: एसी अयमे कान्धीं उतरें
न्ह पञ्चो लती पर स्यरें नवं जाक स्मात येक सरें नगरी को लळा
क्लजाला ग्ल०॥४८॥: पावाना वरी पावा नयतीः धउ धडा म स्तकी वजा
तीः महणती को न्हासी रोको नमारी रीः खवर स्याव हीले॥४९॥:
पावान सुट लेनुं बक्लः मध्ये लळ लळ कालो ब्लः नवं रामै ब्रौलती स
वक्लः हें ऊवन्धीन कायेजालें॥५०॥ त्रेक उद्गव द नेया हामीः नवं या
वान म स्तकी अद्वतीः न जह उलिप उतीः इत्तशी नीवरीः॥५१॥
प्रजन्म पडेशी तीवरीः नैसे पावान अद्वती माहाडा री अद्वन
ग्रामान रीः औट स वी न लाः॥५२॥: न व्लयेन व्ल पुट लैः माडावैव
व्ल स ढाक्की लैः गर हाव्ये खांच मोड लैः पावा नाव्या घार्दः॥५३॥: पा
वा नावा मार सुट लाः न गर लोका सी भंग जालाः पुढाव गवे ना
हीउर लाः यक्काव याला गीः॥५४॥: यक्कल पनीजाउ निउ भरा

हातीः येकतेषु गभाजी रीगतीः नवंजांगी इगडलागतीः अकस्मा
तः॥४५॥ मुंजीयज्ञोदींगम्भुतेंखरेंनाडीनी मनुष्यातेंआकांतप्रवी
न लातेश्वें माहाउडतः॥४६॥ औंगीस्तागताती माघानः येकान्वे
नीगौनिगे प्राणः ईकुमुच्छेना येतानि आजानः वीर युद्धेष्टीती
वरीः॥४७॥ ह स्तीघोडे ब्रह्मतपउलः रथकीतीयकुञ्जसतीमोडि॥४८॥
लेः सारथीआकांतेलेः च दृतेवां॥४९॥ यंडवदकीवेवीरमा
हाप्रतापीयजुंस्तारः महातीजातांवीवारः कामेकैसाकरावा॥५०॥
येसेंविषुवीलंकेवरीः यो या उभार लावान्वेरी आतांते सीमा
विषयरीः आम्हांहोतजसे॥५१॥ लक्ष्यासानधार्दमारीतीः युर्ध्यी
नीब्रह्मतेराहोतीः राहृ सेवे न र बोलतीः परस्यरेंयन्नमैकाः
॥५२॥ आतांमारनीकुटदोतजसे युठेंकान्हीरुरनदीसे न रहमु
तसरहीसीकैसें आतांकायेकरावेः॥५३॥ नवंयवस्मरतीतुज्जदव
वाः येककरीतीयाणाकाकुलतायेकरोकडेमाहनुमंताऽधाव
धावमहणतीः॥५४॥ यवस्मरतीयेकवीराः येकबोझातीसीधेस्व
राः सक्तेनरसीहांवीराः लोकनवसीतातीः॥५५॥ काव्यन्वंदीकाजा

हानीतीः कद्रदेव तेन व सीतीः नवर्मा यान ये नीजाधीकाधीकः १५५॥
महणती वीजार व्रावाकै सादे वो तो न प वेस ह साजातांधरोनि
याधीवसाः भव्लारे धर्मगत्याप्त्वा १५६॥ भगजाकांतौनि सद्वन्द्वज
नः आले सभामंड पादाकौनः नवंते अधर्मश्रीदूर्लुः नीश्चीनवैस
लैजसतीः १५७॥ धर्मश्रीदूर्लुवेष्टिहीः तेऽथेन संवरेष्टुतस्तुष्टीः
भैर सर्वजनहीयुदीः शुदीकरनि सोडीलः १५८॥ जनसेरावैरावै
भाये जातांजाम्हाकोन रहीन जारहन म्ही सर्वसुरवेनीश्चीता
यः भनेवैसलेजासम १५९॥ नवतु इन्द्रनहनेजनासीः पुढे कान्ही
नहेरवां मुर्ध्यासीः मामुर्ध्यनः १६०॥ एसे
उलंदिवदनेकरुमः काकुलनाजाल सर्वजननेहांदेवोश्रीदूर्लुः
कायेकरीताजाला १६१॥ जापुलकरीवेसद्रसेनः तेनगरी द्यावीले
वीस्तारनः भगतेजनासीरहनः सद्रव्लीकासीजालंग १६२॥ जैसे
अभ्यजालेयाजाकासीः छायाकरी सर्वग्रन्थेसीः तैसेसद्रसेनं पा
यानासीः वरन्द्यावरीज्ञेश्वीलः १६३॥ देवेसुद्रसेनपुर्संरोणः केले
जनासीरहनः महणतीहंओ रवीद्युः श्रीदूर्लुदालीलं १६४॥ भग

अनं हजाहा सवज्जनाः लोक स्तुतं लागले श्रीहरसाः मगजा पुल
सीमा भूवनाः लोक नीगते जाले॥१५॥ पाहातां यद्युडें नीदानः श्रो
रजालें होनें वीष्म अक महानीहें करनें को न्हावें जाले॥१६॥ कुड
व पट मंत्रावें हें करन जालें स को नीआवें पुरें कामे करीह त्यावें
भगवटलें विअसे गा॥१७॥ एस बोलतीज नन गर लोकः नवें अकवी॥१८॥
तावेत लापावतः आग आग रह नामा निला वज्जु नवेगें तीकडे पक्ष
तीग॥१९॥ अक वीशवाया जानी व काधीव घरें वेन ती वाहन ग
र्दुउठनी आग नीव व लोक्कना॥२०॥ नाखना वीदामो दरें ती यें
बनवली अकवी सरें तेनें॥२१॥ ली आयारें जन बाहीर आव
ता ती॥२२॥ ह स्त्री साव्यावीत्र ता ज्ञासु हर मोह टी आय ही साव्यः
तेव आग नीव्याव लोक्गः वाउ ग्या पूर्णोनि नीगतीः॥२३॥ मठ मं
उपटे वार्दलें हार न्वो हदे वन वले भ सवज्जन लोलागले व स्तुभा
त्रः॥२४॥ स्त्री याची लुगडी नेतवली यकापुरु वाची वीट बोना
जाली गुमांगे प्रगट देरवीली अर अराज नाची॥२५॥ मानावाल
क सांडोनि जाये यीता कुट बाची वारन पाहे बंधु न धरी विसो

योः कीवकाकुद्गतिकरीता: ॥७४॥ जाग्नीधाकेंव सुकारीलीः तेतेश
विजग्नेनिष्ठ घटजालीः कणकरोटीजग्नालीः बहुतकरोनीः ॥७५॥
आवधाआ गनीन्याकलोक्तजाल्याः वीरवेताळ्वैतवीलाः जनालग्नी
बहुतकेलाः हलकालोळः ॥७६॥ येकुद्गरीनेउनिरेवीतीः मागौते
घरीभाजीयेतीः तवंस्यावस्तुतज्ञाहोतीः जेशीलतेष्यः ॥७७॥ एसा
कटकनगरामीनरीः आसनेतन्त्रबहुतापरीः लोकआकांतौनि
जाहीरीः पुनरूपीआलेसमामंडपीः ॥७८॥ वंदौनिश्चीष्टलानेः
सांघनीआक्षीचेस्थीतीनेंः रुद्धमीस्वामीसर्वनगरातेंः जाहीह
हनजालें ॥७९॥ पावानाकेलेंः गीवा रनः तवंसवेविवेतवीलाजा
क्तेतयालग्नीकाहीप्रथया ॥८०॥ वीरवेता
ल्वैतवीलाः महैनियेहुडाजाक्षीन्याकलोक्तजालाः मगश्चीष्ट
लहेवोबोहुलाः नालीश्ववनेवरुनीः ॥८१॥ मगजोलाउनिवत्रा
नः जाहीदेताजालाजग्नीवनः महेनुम्हीवेताळ्गलागौनजा
तांशांतीकरावाः ॥८२॥ पुर्वविताळ्वैवत्रैनोवैरदेवआक्षाली
स्यावरः मगनीगलासत्वरः वत्रानराजाः ॥८३॥ व्यारलहुभेष



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com